ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 23 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 अप्रैल, 2024 से रविवार 28 अप्रैल, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विभिन्न भाषाओं में दयानन्दकृत अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश"

www.vedicprakashan.com / +91-9540040339

महर्षि दयानन्द के जीवन, कार्य, इतिहास-लेखन, स्मृतियों के बारे में जानने के लिए
8447-200-200
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

आर्य समाज की सभी चल रही योजनाओं प्रकल्पों, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मिडिया हैंडल्स का उपयोग करने हेतु
8750-200-300
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

यज्ञ के शोध-विज्ञान-इतिहास एवं लाभ और विधि जानने के लिए
9868-47-47-47
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, आर्यसमाज ह्यूस्टन एवं दानदाताओं के सहयोग से आर्य प्रगति स्कॉलरशिप योजना के अन्तर्गत

जरूरतमंद योग्य और मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृति वितरित

परीक्षा एवं साक्षात्कार द्वारा देशभर से चयनित 114 छात्रों को बांटी लगभग 45 लाख की स्कॉलरशिप

दानदाताओं द्वारा दी गई स्कॉलरशिप से होगा देश एवं युवाओं के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण - सुरेन्द्र कुमार आर्य, प्रधान, दयानन्द सेवाश्रम संघ

निरन्तर आगे बढ रहा है - आर्य समाज का सेवा यज्ञ - धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

विद्यार्थी जीवन में महत्वपूर्ण है परिश्रम और पुरुषार्थ, इसी से मिलेगी सफलता - देव महाजन, आर्य समाज ह्यूस्टन

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना आर्य समाज का नियम और उद्देश्य - भूषण वर्मा, आर्य समाज ह्यूस्टन

छात्रवृति वितरण समारोह में ऑनलाइन सम्मिलित हुए आर्यसमाज अमेरिका के अधिकारी एवं दानदाता परिवार

भारत के उज्जवल भविष्य के लिए आर्य समाज हमेशा से शिक्षा सेवा यज्ञ का अखण्ड प्रकल्प चलाता आ रहा है। जिसमें गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, आदिवासी क्षेत्रों में बालवाड़ी, छात्रावास, अनाथालय और विश्व प्रसिद्ध डीएवी जैसे शिक्षण संस्थान प्रमुखता से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस अनुक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और आर्य समाज ग्रेटर ह्यूस्टन के अंतर्गत आर्य प्रगति प्रोजेक्ट के माध्यम से भारत के विभिन्न राज्यों से चयनित विद्यार्थियों को जो कि 12वीं कक्षा में पास होकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना तो

आर्य प्रगति स्कॉलरशिप वर्ष 2024 के लिए आवेदन आमन्त्रित
अन्तिम तिथि 31 अगस्त, 2024

- शेष पृष्ठ 4-5-6 पर

12वीं पास छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति
Pragati
भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों को आर्य समाज द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति के बारे में पूरी जानकारी (इंजीनियरिंग/मेडिकल/कानून/रक्षा आदि)
aryapragati.com
9311721172

अंतरराष्ट्रीय यज्ञ दिवस
आइए, लाखों परिवारों के साथ एक समय पर यज्ञ करें
शुक्रवार, 3 मई, 2024 प्रात: 9 बजे
अपने यज्ञ की फोटो और वीडियो फेसबुक और ट्विटर पर #घरघरयज्ञ के हैशटैग के साथ शेयर करें

आपका एक वोट
लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है
आइए, ज्यादा से ज्यादा मतदान कर लोकतंत्र को मजबूत बनाने में योगदान दें

देववाणी-संस्कृत

बड़े से बड़े भय को दूर करने वाला

वेद-स्वाध्याय

इन्द्रो अङ्ग महद् भयमभी षदप चुच्यवत्।
स हि स्थिरो विचर्षणिः।। ऋ. 2/41/10
ऋषिः गृत्समदः।। **देवताः** इन्द्रः।। **छन्दः** गायत्री।।

शब्दार्थ - **अङ्ग** = हे प्यारे! **इन्द्रः** = इन्द्र परमेश्वर तो **अभीषत्** = सामने आये हुए **महद् भयम्** = बड़े भय को भी **अप चुच्यवत्** = विनष्ट कर देता है। **सः हि** = वह ही निश्चय पूर्वक **स्थिरः** = स्थिर है, अचल है, शाश्वत है और **विचर्षणिः** = सब जगत् को ठीक-ठीक देखने वाला है।

विनय - हे प्यारे! तू क्यों घबराता है? तेरे सामने जो भय उपस्थित है उससे बहुत बड़े भय और बहुत भारी विपत्तियां मनुष्य पर आ सकती हैं और आती हैं, परन्तु हमारे परमेश्वर उन सबको क्षण में टाल सकते हैं और टाल देते हैं। उसके सामने, उसके मुकाबले मं आये हुए महान्-से-महान भय पलभर भी नहीं ठहर सकते। हे प्यारे! तू देख कि इस संसार में एक वह इन्द्र ही स्थिर वस्तु है। वहीं सत्य है, सनातन, अटल, अच्युत है, कभी नष्ट न होने वाला है। शेष सब-कुछ-सभी कुछ क्षणभंगुर है, विनश्वर है, अशाश्वत है और चला जाने वाला है। यही एक महासत्य है जिसे सिखाने के लिए संसार में चौबीसों घण्टों की घटनाएं हो रही हैं। हे मनुष्य! तू इस महासत्य पर विश्वास कर और निर्भय हो जा। वास्तव में संसार के सब दुःख, क्लेश, भय, संकट टल जाने वाले हैं, नश्वर हैं, क्योंकि ये नश्वर वस्तुओं द्वारा और अज्ञान द्वारा बने हैं। संसार में जो अनश्वर है, अटल है वह तो परमेश्वर ही है। इस समय चाहे तुझे सर्वत्र भय-ही-भय दृष्टिगोचर होता हो, परन्तु उस अटल इन्द्र की शरण पकड़ने पर यह सब ऐसे जाता रहेगा जैसेकि सदा रहने वाले अटल इन्द्र=सूर्य के सामने से नष्ट हो जाने वाले बादलों का भारी-से भारी समूह जाता रहता है, छिन्न-भिन्न हो जाता है, वह सदा सूर्य को घेरे नहीं रह सकता, अतः हे प्यारे! तू अब उस परमेश्वर की ही शरण पकड़ जो स्थिर है और 'विचर्षणि' है- जो सदा रहने वाला है और इस सब जगत् को ठीक-ठीक देखने वाला सर्वज्ञ है। यह समझते ही तेरे सब भय मिट जाएंगे। इन्द्र को स्थिर और विचर्षणि जान लेना ही उसकी शरण में आ जाना है। जिसने सचमुच उसे एकमात्र नित्य और सर्वज्ञ वस्तु करके देख लिया है वह उसे छोड़कर और कहां अपना आश्रय टिका सकता है। और जिसने उसके इस रूप को देख लिया उसके सामने कौन-सा भय ठहर सकता है? इसलिए प्यारे! तू घबरा मत, तू उसकी शरण पकड़। यह सामने आये हुए इस छोटे-से भय को ही नहीं मिटा देगा, अपितु एक दिन आएगा जबकि यह जगदीश्वर तुझसे संसार के सबसे भारी भय को, संसार- बन्ध के महान् भय को, बार-बार जीने- मरने के महाभय को भी छुड़ाकर तुझे सदा के लिए अजर, अमर और अभय कर देगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

जय भीम - जय मीम का नारा देने वाले सैकुलरों द्वारा अम्बेडकर जयन्ती न मनाने का मामला

डॉ. अम्बेडकर से किनारा क्यों कर रहे हैं संविधान बचाने वाले तथाकथित लिबरल

संविधान बचाना नहीं, दूसरे मार्ग से शरियत लाना इनका लक्ष्य

.....ये सेकुलर पत्रकार नहीं है। इनके पीछे मजहबी ताकत है। आप देखना ये सेकुलर पत्रकार हमेशा मनुस्मृति से लेकर रामचरित्र मानस पर सवाल उठाते हैं। लेकिन कभी आपने इनको कुरान की व्याख्या करते देखा है? ये लोग उन मूवी का विरोध करेंगे जिसमें लव जिहाद या मुस्लिमों के अत्याचार दिखाए जाते हैं, ये हमेशा दूसरे धर्म मत को निशाना बनाते रहेंगे, ये कभी नहीं कहेंगे कि इस्लाम अपने आप में ही समस्या का कारण है। आंबेडकर जी के जन्मदिवस की बधाई या शुभकामनाएं ये लोग नहीं देंगे क्योंकि इनकी लड़ाई संविधान बचाना नहीं ये तो दूसरे मार्ग से शरियत लाना चाहते हैं। तभी ये कश्मीर फाइल्स और केरला स्टोरी का विरोध करते है। श्रद्धा हत्याकांड उसके हुए टुकडों को आम घटनाओं से जोड़ते हैं, बरेली में दो बच्चो की हत्या पर खामोश हो जाते हैं .....

इसी महीने 14 फरवरी को बाबा साहब भीमराव आंबेडकर जी का जन्मदिवस था। उस दिन किसी भी कथित संविधान बचाने वाले पत्रकार यूट्यूबर्स ने उनके जन्मदिवस पर एक ट्वीट भी नहीं किया। जबकि उससे तीन दिन पहले सबने ईद की बधाई दिन निकलने से पहले ही डाल दी थी। ईद बधाई देने और आंबेडकर जी को इग्नोर करने पर दिलीप मंडल ने पूछा है क्या ये लोग जानते हैं कि इनके दर्शक सिर्फ मुसलमान हैं? सेक्यूलर खेमे के यूट्यूबर क्या मुस्लिम दर्शकों पर निर्भर हो चुके हैं? ईद की बधाई देने वाले इन यूट्यूबर्स ने बाबा साहब की जयंती को क्यों भुला दिया?

इससे दो चीजें निकलकर सामने आई जिसे शायद दिलीप मंडल समझ गये हों! या बहुजन चिन्तक दिलीप मंडल दूसरे जोगेन्द्र नाथ मंडल ना बनना चाहते हों! जो अभी से बहुजनों को चेता रहे हों कि मीम से दूर रहो, ये तुम्हें निगल जायेंगे। क्योंकि इतिहास में जोगेन्द्र नाथ मंडल इसका शिकार हो चुका है।

दरअसल बंटवारे के समय जोगेन्द्रनाथ मंडल, जिन्ना और मुस्लिम लीग पर लट्टू हो गये थे। जोगेंद्र ने ही अपनी ताकत से असम के सिलहट को पाकिस्तान में मिला दिया था। जोगेन्द्र नाथ मंडल का मानना था कि हिन्दुओं के बीच दलितों की स्थिति में कभी सुधार नहीं हो सकता। अतः मुसलमान और दलित पाकिस्तान में भाई-भाई की तरह रह सकते हैं। उनकी आह्वान पर पाकिस्तान और बांग्लादेश के लाखों-करोड़ों दलित विभाजन के दौरान न सिर्फ वहीं रह गये बल्कि लाखों उनके साथ पाकिस्तान चले गये। जबकि उन्हें अंबेडकर जी ने चेताया था कि इस्लाम मुसलमानों को गैरमुसलमानों के साथ सौहाद्रपूर्ण व्यवहार की अनुमति नहीं देता, गैरमुसलमान और मुसलमान कभी एक साथ नहीं रह सकते। कुरान गैर मुसलमानों को मित्र बनाने का विरोधी है, इसीलिए काफिर सिर्फ घृणा और शत्रुता के योग्य हैं। इस्लामी कानून सुधार के विरोधी हैं। वो धर्म निरपेक्षता को नहीं मानते। मुस्लिम कानूनों के अनुसार पाकिस्तान हिन्दुओं और मुसलमानों की समान मातृभूमि नहीं हो सकती।

जोंगेंद्र नाथ मंडल ने एक नहीं सुनी और पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने जोगेन्द्र नाथ मंडल को पाकिस्तान की संविधान सभा के पहले सत्र का अध्यक्ष बनाया और वह पाकिस्तान के पहले कानून मंत्री भी बने। पर जल्द ही उनका दलित-मुस्लिम भाई-भाई का भ्रम टूट गया। जब वहां दलितों को मारा जाने लगा, उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया जाने लगा तो जोगेंद्र नाथ मंडल ने खुद तीन साल बाद वहां से भागकर भारत में शरण ले ली, पर उनके बहकावे में आकर पाकिस्तान में रह गये लाखों-करोड़ों दलित हिन्दू, बौद्ध आज इतिहास बन गये हैं।

दरअसल जिन्हें आज लोग सेकुलर पत्रकार समझ रहे हैं ये सेकुलर नहीं है, ये वामपंथी हैं और इनका एजेंडा क्या है, इसे भी समझ लीजिये। साल 1989 में सलमान रश्दी कुरान की ओर संकेत करते हुए 'शैतान की आयतें' नाम की किताब लिखते हैं, और ईरान मुल्ला अयातोला खुमेनी इसके खिलाफ फतवा जारी करते हैं। तब विश्वभर के वामपंथी रुश्दी के पक्ष में खड़े हो गये थे। उस समय एक लेखक सुसान सोंटांग ने कहा था, 'एक लेखक के ऊपर आक्रमण से हमें उतना ही धक्का लगा है जितना एक तेल टैंकर पर आक्रमण से'।

किन्तु इसके बाद 7 जनवरी 2015 को एके 47 से लैस दो बंदूकधारियों ने इस्लाम समर्थक नारे लगाते हुए फ्रांसीसी पत्रिका 'चार्ली हेब्दो' के कार्यालय पर धावा बोला और 12 लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी। हमलावर जोर-जोर से कह रहे थे, 'हमने पैगंबर का बदला लिया है' और 'अल्लाहु अकबर' के नारे लगा रहे थे। लेकिन इस हमले से वामपंथी या मार्क्सवादी बिलकुल भी चकित या असहज दिखाई नहीं दिए, क्योंकि हमले से कई वर्ष पहले 2008 में हुए इसे वामपंथ और इस्लाम का गठबंधन हो गया था।

ये गठबंधन हुआ था, ईरान की राजधानी तेहरान में। ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद और जाने-माने कम्युनिस्ट ह्यजो चावेज दोनों एक साथ दिखाई दिए। हालाँकि इससे पहले 2007 में प्रमुख कम्यूनिस्ट चे गुवेरा के पुत्र कैमिलो ने भी घोषणा थी कि, ईरान और क्यूबा एक दूसरे के सहयोग से लिबरल देशों को उसके घुटनों के बल ला सकते हैं। केवल मार्क्सवादियों और इस्लामवादियों का गठबन्धन ही इन लोगों को नष्ट कर सकता है।

उसी दौरान वामपंथी समूह के ही नेता डेनिस कुसीनिच ने 2004 में अपने पहले प्रचार में कुरान को हाथ में पकड़ा और एक मुस्लिम सभा को 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाने को प्रेरित किया और उन्होंने तो यहाँ तक घोषणा की, 'मैं अपने कार्यालय में कुरान की एक प्रति रखता हूँ।' इसके अलावा ब्रिटेन की सोशलिस्ट लेबर पार्टी के युवा पत्रकार स्पार्क ने इजराइल में तेल अवीव के बार में आत्मघाती आक्रमण करने वाले ब्रिटेन के युवक आसिफ मोहम्मद हनीफ की प्रशंसा एक 'क्रांतिकारी युवक' के रूप में की और अमेरिका के कम्युनिस्ट समाचार पत्र 'वर्कर्स वर्ल्ड' ने हिजबुल्लाह के मास्टर आतंकवादी इमाद मुघनियेह को श्रद्धांजलि अर्पित की थी। यही नहीं कुछ वामपंथी तो और आगे बढ़ गये और इस्लाम में धर्मांतरित हो गये।

- जारी पृष्ठ 7 पर

जन्मोत्सव 26 अप्रैल पर विशेष स्मरण

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर आर्य जगत् के त्यागी, बलिदानी और समर्पित महापुरुषों की गाथा

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी : संगीन की भांति सीना चीरती थी जिसकी कलम

19 मार्च 1890 दिन मंगलवार, सुबह 6 बजे अविभाजित भारत के मुल्तान के एक घर में अपने परिवारजनों का थोड़ा-सा सहारा लेकर एक 26 वर्ष का युवा ओ३म शान्तिः-शान्तिः कहते हुये भूमि पर लेट गया। परिवार के लोगों के आँसू बह रहे थे, परन्तु युवा के मुख पर शान्ति थी... कोई घंटे भर बाद जैसे सूर्य की किरणों ने धरा को आलोकित किया, उधर वैदिक धर्म के इस दिव्य नक्षत्र ने अन्तिम श्वास ली। यह कहानी है भारत भूमि के एक ऐसे अनमोल हीरे की, जिसकी कीमत चाहकर भी नहीं लगाई जा सकती। यह अनमोल हीरा था स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का अनन्य शिष्य और आर्य समाज की कलम का एक ऐसा सिपाही जिसकी कलम संगीन की तरह विधर्मियों का सीना चीरती चली जाती थी। उस महापुरुष का नाम है पं० गुरुदत्त विद्यार्थी।

अविभाजित भारत (अब पाकिस्तान) का नगर मुल्तान और इसी मुल्तान में श्री रामकृष्ण मेहता रहते थे। उनके अनेकों संतान हुई लेकिन अंत में तीन ही पुत्रियाँ जीवित बची। रामकृष्ण मेहता जी ने ईश्वर पर अटल विश्वास बनाए रखा। आखिर 26 अप्रैल सन 1864 को रामकृष्ण की इच्छा पूरी हुई मूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण बच्चे का नाम मूला रखा गया।

यह कैसा संयोग था, क्योंकि महार्षि दयानन्द ने भी मूल नक्षत्र में जन्म लिया और उनका नाम मूलशंकर प्रसिद्ध हुआ। फलित ज्योतिष के अनुसार मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातकों को अच्छा नहीं माना जाता। परन्तु ईश्वर का विधान कुछ दूसरा है। एक मूलशंकर जिसने आर्यसमाज के पौधे को रोपित किया, वही दूसरे बालक मूला ने उसे सुरक्षित रखा और अपने रक्त कि अन्तिम बूंद रहने तक न केवल सींचने में लगे रहे। बल्कि उनकी लग्न मेहनत से ही आर्यसमाज एक पूरा वटवृक्ष बनकर अपनी शीतल छाया से ग्रीष्म ऋतु की धूप से सन्तप्त राहगीरों के समान ज्ञान-पिपासुओं को वेदामृत का पान कराने में समर्थ बन सका।

एक वर्ष का होते ही बालक दौड़ने लगा। वह जिस वस्तु को देखता उसके विषय में अनेक प्रश्न पूछने लगता। पाँच वर्ष का हो जाने पर पाठशाला में भेजा गया। गुरुजन उसे प्यार से वैरागी कहने लगे। प्राइमरी पाठशाला में ही उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और गणित सीखना प्रारम्भ किया। उनके पिता स्वयं अध्यापक थे। उन्होंने बालक को मौखिक गणित पढ़ाना शुरू किया। कुशाग्र बुद्धि बालक लाखों तक गुणा भाग मौखिक ही कर लेता था।

आठ वर्ष का होने पर जिस विद्यालय में रामकृष्ण पढ़ाते थे उसी में प्रवेश दिलाया गया। अब बालक का नाम गुरुदत्त पड़ चुका था। मिडिल की परीक्षा से पूर्व एक दिन उसके पिताजी ने उसे मांसाहार करने के लिये प्रेरित किया। उन्हीं दिनों गुरुदत्त को 'मांसाहार से होने वाली 16 हानियाँ' नामक एक पुस्तक हाथ लग गई , जिसे पढ़कर बालक को दृढ़ विश्वास हो गया कि मांस मनुष्य का भोजन नहीं है।

बस फिर क्या था, गुरुदत्त ने झट पिता जी को उत्तर दिया - पिता श्री! जब तक तर्क एवं प्रमाणों से यह सिद्ध नहीं हो जाता कि मांस-भक्षण में पाप नहीं है, तब तक आप मुझे इसके लिये बाधित न करें।

उन्हीं दिनों कहीं से हिन्दू मत दर्पण पुस्तक गुरुदत्त के हाथ लगी जिसमें से प्राणायाम और जप की विधि लिखी थी। अब गुरुदत्त घण्टों रात्रि में खुले आकाश को निहारता और आसमान में सितारों को देखता रहता।

उन दिनों हिन्दुओं में बाल विवाह की प्रथा थी। इधर मिडिल कक्षा में पढ़ते हुए ही गुरुदत्त का विवाह कर दिया गया। उधर आठवीं कक्षा को उत्तीर्ण कर उसे हाई स्कूल में प्रवेश कराया गया। अब उसे अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए उपयुक्त वातावरण मिला। विधालय में अंग्रेजी भाषा का बोलबाला था। इसके साथ गुरुदत्त ने संस्कृत पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। जब संस्कृत पढ़ाने वाले अध्यापक से सन्तुष्ट नहीं हुये तो स्वयं अंग्रेजी में लिखित संस्कृत व्याकरण को पढ़ना शुरू कर दिया। अब एक महान परिवर्तन का दिन था। इस दिन गुरुदत्त के हाथों महर्षि दयानन्द जी की ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पुस्तक लग गई। जिसके संस्कृत भाग को शब्दकोष की सहायता से पढ़ लिया गया। जब संस्कृत पढ़ने की रुचि और बढ़ी तो आर्यसमाज के अधिकारियों ने उसके लिये स्वामी अक्षयानन्द से प्रार्थना की, परन्तु इस मेधावी छात्र को सन्तुष्टि नहीं हुई। जिसने 40 दिन में ही महर्षि पाणिनिकृत अष्टाध्यायी कंठस्थ कर ली हो, उसकी ज्ञान-पिपाशा को शान्त करने का सामर्थ्य सबमें नहीं था। अन्त में उसने स्वयं ही सहायक ग्रन्थों की सहायता से संस्कृत पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। सत्यार्थ प्रकाश को दशम कक्षा में पहली बार पढ़ा तो आर्यसमाज में रुचि बढ़ती ही चली गई। आगे जाकर वे लिखते हैं कि मैंने सत्यार्थप्रकाश को अठारह बार पढ़ा है, जब भी इसे पढता हूँ तो कुछ नये रत्न हाथ लगते हैं।

सन् 1880 में गुरुदत्त आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण कर ली थी, स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् गुरुदत्त ने कॉलेज में प्रवेश लिया। यहीं पर उनकी मित्रता लाला लाजपतराय और महात्मा हंसराज से हुई। कहा जाता है इन्हें गुरुदत्त

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य रक्षा

उत्तम स्वास्थ्य के सूत्र एवं रोगों से बचाव

आर्य सन्देश के इस अंक में स्वास्थ्य रक्षा स्तंभ में हम आपको बता रहे हैं कुछ वे उपयोगी प्रचीन नुस्खे जिनको अपनाकर आप जटिल बीमारियों से स्वयं को ओर अपने परिवार स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन हम यहां पर यह अवश्य स्पष्ट करना चाहते हैं कि ये पुराने वैद्यों द्वारा प्रचलित घरेलू नुस्खे हैं, अतः अगर किसी को कोई खतरनाक बीमारी हो तो कृपया अपने चिकित्सक का परामर्श और उपचार ही प्रयोग में लाएं और स्वस्थ रहें। - सम्पादक

नेत्र-ज्योतिवर्धक- 1. बादाम गिरी 100 ग्राम, सौंफ (बड़ी) 100 ग्राम, कूजामिश्रि 100ग्राम (कूट पीस) बारीक चूर्ण बनाकर किसी कांच के बर्तन में रख लें। 10ग्राम चूर्ण सोते समय 200ग्राम दूध के साथ 40 दिन तक सेवन करें। दिमाग भी बढ़ता है, बच्चों को आधी मात्रा दें।

2. आंखों में प्रतिदिन एक माह तक 1 बूंद शहद प्रतिदिन लगावें सोते समय।

3. बड़ के दुध लगाने से आंख के जाले व मोतियाबिंद में लाभकारी- सुबह।

4. आंखों में उठते ही अपना थूक लगावें सर्वोत्तम ज्योतिवर्धक मुंह धेने से पहले।

5. गाजर, पपीता, पालक का सेवन करें।

6. अल्प दृष्टि में टमाटर जूस 100ग्राम + कालीमिर्च 2 नग मिलाकर पीवें।

7. सौंफ खाने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।

8. आँख में पानी आने या लाल होने पर देशी गाय का घी 2-2 बूंद आँखों में डालें।

एक्युप्रेशर- लिवर, कीडनी, आंखें के पाइंट दबावें। प्राणायाम- अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, कपाल भांति।

मूत्र विकार- 1. खाली पेट 10मिलि गौमुत्र सेवन करें।

2. मूत्र रूकने पर- जीरा 2ग्राम + मिश्रि 2 ग्राम पीसकर सामान्य जल के साथ सेवन करें। दिन में 3 बार पीवें और सुबह 2 गुड़ + तिल खावें, मूली के 3-4 पत्ते का रस सेवन करें।

3. मेथी साग का सेवन करें (बार-बार पेशाब आना बंद होता है।) केला, अंगूर खावें। 4. शाम को पालक की सब्जी लें। मूत्र कम आने पर दो छोटी इलायची पीसकर दुध में पीयें। मूत्र जलन में गुलर (3 पत्ते पीसकर पानी या दालचीनी का सेवन करें। **प्राणायाम**-कपाल भांति, अग्निसर, रेचक। **आसन**- धनुरासन, वज्रासन, गोमुखासन।

दमा- 1. नीम तेल शुद्ध 3-6 बूंद तक पान में रखकर खाने से श्वास रोगः सम्यक भवति। 5 ग्राम दालचीनी 5 ग्राम गुड़ सेवन सुबह तीन माह सेवन करें। गोमूत्र 10मिलि सुबह-शाम खाली पेट पीवें।

श्वास-दमा - 1. वायविडंग, सफेद पुनर्नवा, चित्राक की जड़ की छाल। 2. सतगिलोय 3. सौंठ 4. कालीमिर्च 5. अश्वगंध नागौरी 6. छोटी पीपर 7. असली विधरा 8. बड़ी हरड़ की बकली (छिलका), 9. बहेड़ा की बकली 10. आवंला की बकली सभी 200-200ग्राम लेकर साफ करके बारीक कूटें। पुराना गुड़ की एक तार चासनी में 6-6 ग्राम की गोलियां बनाकर सूखा लें।

3. लहसुन की दो कली 200ग्राम दूध में उबालें खीर की तरह गाढ़ा होने पर सेवन करें। दो समय।

4. सोते समय दोनों नाकों में 2-2 बूंद सरसों तेल डालें-अश्वगंध चूर्ण + सोंठ चूर्ण +1 चम्मच सेवन करें।

5. पीपल के तीन पत्ते प्रातः खाली पेट सेवन करें 6 माह।

6. गोमूत्र 10मिलि पतंजलि खाली पेट सेवन करें।

7. पुनर्नवा जड़ का चूर्ण 3 ग्राम + 50 मि.ग्रा. हल्दी मिलाकर प्रातः-शाम सेवन करें।

प्राणायाम- कपाल भांति, सूर्य भेदी, अग्निसर। **आसन**- शीर्षासन, सर्पासन, शल्भासन, हलासन, धनुरासन, वज्रासन। (हमेशा गर्म पानी पीवें)

- *जारी अगले अंक में*

प्रथम पृष्ठ का शेष

जरुरतमंद योग्य और मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु .....

चाहते हैं लेकिन आर्थिक अभाव के कारण वे आगे पढ़ने में असमर्थता अनुभव कर रहे थे, ऐसे मेधावी और योग्य छात्रों को 21 अप्रैल 2024 को आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों ने प्रतिभाशाली, मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की। इस अवसर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला, मन्त्री श्री विश्रुत आर्य, आर्य समाज ग्रेटर ह्यूस्टन से श्री भूषण वर्मा जी, श्री देव महाजन जी ऑनलाइन उपस्थित रहे। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सुरेंद्र रैली जी, श्री राजकुमार गुप्ता जी, श्रीमती उषा किरण कथूरिया जी, श्री विनय आर्य जी, श्री सतीश चड्ढा जी श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री विरेन्द्र सरदाना जी, श्री मनीष भाटिया जी और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, आर्य केंद्रीय सभा, सभी वेद प्रचार मंडलों के समस्त अधिकारी, आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित थे।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित सभी छात्र-छात्राओं और उनके अभिभावकों का स्वागत करते हुए बताया कि आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित एक परोपकारी संस्था है। इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 150 वर्ष पूर्व मुम्बई में की थी। आज जब हम महर्षि की 200वीं जयन्ती वर्ष और आर्य समाज का 150वां स्थापना वर्ष मना रहे हैं, तब आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के विषय में सभी विद्यार्थियों को अवश्य जानना चाहिए कि आर्य समाज किस संस्था का नाम है। अत: इस अवसर पर एक विशेष वीडियो प्रसारित की गयी जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के सेवा कार्यों, महर्षि दयानन्द के उपकार और उनके अनुयाइयों के योगदान और बलिदान तथा आर्य समाज के द्वारा विश्वभर में चलाये जा रहे सेवा कार्यों को देखकर सभी छात्र छात्राएं भाव विभोर हो गये। छात्रवृति

- जारी पृष्ठ 5 पर

150वें आर्य समाज स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में द्वारका में बाल सांस्कृतिक कार्यक्रम

आर्य समाज स्थापना दिवस के 150वें वर्ष के शुभारम्भ के उपलक्ष्य में आर्य समाज मंदिर द्वारका द्वारा 21 अप्रैल, 2024 को बाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सामाजिक संस्था 'स्पास्टिक चाइल्ड सोसाइटी' के विशेष सहयोग से स्नेह कुंज सै. 5, द्वारका में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य परिवारों के बच्चों के साथ-साथ नए परिवारों के बच्चों को विशेष रूप से बाल कार्यक्रम में शामिल किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक यज्ञ से हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान आचार्य अखिलेश्वर थे। यज्ञ में आर्य समाज के सदस्यों के साथ "स्नेह कुंज" के बच्चे यजमान बने।

'बाल सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने वेद मंत्रों का गायन, देश भक्ति के गीतों पर नृत्य की प्रस्तुति के साथ वाद्ययंत्रों पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का समापन ऋषि दयानन्द के 200वें जन्मोत्सव के बधाई गीत के साथ हुआ। बच्चों की उत्कृष्ट प्रस्तुतियों की सभी आर्यजनों ने प्रशंसा और सराहना की। कार्यक्रम में लगभग 30 बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियां दी। अंत में आचार्य अखिलेश्वर जी ने बच्चों को आशीर्वचन देते हुए देश और समाज में आर्य समाज की भूमिका और योगदान पर प्रकाश डाला और आह्वान किया कि बच्चे समाज के उत्थान में अपने योगदान को सदैव स्मरण रखें।

इस अवसर पर वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के पदाधिकारी श्री ज्योति ओबराय, श्री मुकेश आर्य जी और अन्य आर्य समाजों के विशिष्टजन भी उपस्थित हुए। कार्यक्रम के दौरान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बनाई गई 'भाव स्मरण पुस्तिका' पर आर्य समाज से पहली बार जुडे और अन्यन लोगों के संदेश और उदगार लिए गए। इस कार्यक्रम में लगभग 200 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम के उपरांत ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया। - ***विनोद कालरा, मन्त्री***

आर्य समाज सुन्दर विहार का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सुन्दर विहार, नई दिल्ली का वार्षिक उत्सव 5, 6, 7 अप्रैल 2024 को बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में भजनोपदेशक श्री अंकित उपाध्याय के सुमधुर भजन एवं वैदिक वक्ता आचार्य डॉ. कल्पना जी के ओजस्वी प्रवचन हुए। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने भी आर्यजनों का उत्साह वर्धन किया।

समापन 7 अप्रैल को प्रात: पांच कुण्डीय यज्ञ से हुआ, उसके पश्चात् बच्चों का अतिसुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। समाज की महिलाओं द्वारा 'वेदों के राही दयानन्द स्वामी' सामूहिक गान के रूप में प्रस्तुत करके आर्यजनों में जोश भर दिया। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्डा एवं पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महामंत्री श्री राकेश आर्य जी भी उपस्थिति रहे। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में काफी अधिक संख्या में लोगों ने भाग लेकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय निगम पार्षद श्रीमती मोनिका गोयल एवं विधायक श्री रघुवेन्द्र शोकीन जी भी उपस्थित रहे।

- ***मन्त्री***

पृष्ठ 4 का शेष

वितरण से पूर्व इस सेवा योजना के प्रमुख सूत्रधारों में से एक श्री भूषण वर्मा जी ह्यूस्टन अमेरिका ने अपने विशेष संदेश में कहा कि आर्य समाज के 8वें नियम में महर्षि ने हमें बताया कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए और 9 वें नियम में कहा है कि प्रत्येक को अपनी उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। महर्षि की इसी प्रेरणा को आधार बनाकर हमने पहले 17 बच्चों को छात्रवृति दी थी आज हम 114 बच्चों को स्कॉलरशिप दे रहे हैं। मैं सभी बच्चों को सफलता की शुभ कामनाए देते हुए यही कहना चाहता हूँ कि सभी अपने कर्तव्यों का पालन करें, कर्तव्य अपने प्रति, दूसरों के प्रति, देश के प्रति और ईश्वर के प्रति निर्वहन करें, आने वाले पीढ़ियों की प्रेरणा बनें, हम इस छात्रवृति योजना को जल्दी ही 200 की संख्या तक लेकर जायेंगे। आपने दिल्ली सभा, अखिल भारतीय सेवा श्रम संघ सहित दिल्ली सभा के अधिकारियों का इस रचनात्मक कार्य के लिए आभार किया। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी ने बच्चों शुभ कामनाएं और आशीर्वाद देते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती, आर्य समाज का 150 वां स्थापना दिवस की भी शुभकामनाएं और बधाई दी। आपने शिक्षा को सबसे बड़ा महत्व देते

- *जारी पृष्ठ 6 पर*

आर्य प्रगति स्कॉलरशिप हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के अन्तर्गत सहयोग देने वाले आर्य महानुभाव

- **Late Smt Sushila & Shri Ram Chand Mahajan Scholarship:** sponsored by Madhu & Ashok Gupta, Shashi & Virendra Mahajan, Aruna & Narinder Mahajan, Sushma & Devinder Mahajan, Shashi & Rajinder Mahajan
- **Late Smt Pushpa Mahajan & Principal T.R. Gupta Scholarship:** sponsored by Madhu & Ashok Gupta, Shashi & Virendra Mahajan, Aruna & Narinder Mahajan, Sushma & Devinder Mahajan, Shashi & Rajinder Mahajan
- **Late Smt Shashi Prabha & Shri Harbans Lal Gupta Scholarship:** sponsored by Sushma & Devinder Mahajan, Pratibha & Ramesh Gupta, Ranjana & Vishvinder Mahajan, Anu & Sanjeev Mahajan
- **Sushma & Devinder Mahajan Scholarship**
- **Madhu & Ashok Gupta Scholarship**
- **Aruna & Narinder Mahajan Scholarship**
- **Shashi & Virendra Mahajan Scholarship**
- **Vijay & Bhushan Verma Scholarship**
- **Late Shri Vidya Sagar & Smt Laj Wanti Aggarwal Fund Scholarship:** sponsored by Satish Goel
- **Sushma & Arvind Mahajan Scholarship**

साप्ताहिक स्वाध्याय

गंगा तट पर सिंहनाद

(सन् 1867 से 1869 के सितम्बर मास तक)

गतांक से आगे -

उन्हें यह ज्ञात न था कि महर्षि जी व्याकरण के भी अपूर्व पण्डित हैं।

व्याकरण में भी पं० हलधर की हार हुई। उपस्थित पण्डितों ने इस बात को स्वीकार किया। तब तो महर्षि जी का प्रभाव और भी अधिक हो गया। फर्रुखाबाद के कई भक्त सेठों ने वेद-वेदांग की शिक्षा के लिए पाठशाला स्थापित करा दी। मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध आदि से लोगों की श्रद्धा उड़ गई और गली-गली, कूचे कूचे में पाठशालाओं के बालक तक महर्षि जी से सुनी हुई युक्तियां दोहराकर ब्राह्मण गुरुओं का नाकों दम करने लगे।

फर्रुखबाद से अनेक स्थानों पर भ्रमण करते हुए महर्षि दयानन्द कानपुर पहुंचे, और गंगा तट पर आसन जमाया। जैसे मधु की प्यासी मधुमक्खियां दूर-दूर से आकर फूल के इर्द-गिर्द घूमने लगती हैं, इसी प्रकार उस जागृति- काल की उतावली जनता धर्म की प्यास बुझाने के लिए विश्राम घाट की ओर उमड़ने लगी। पौराणिक मण्डल में हलचल मच गई। धनी साहूकारों ने बहुत सा धन व्यय करके पण्डितों का जमाव किया। फर्रुखाबाद की चोट से घायल पं० हलधर ओझा अपनी नष्ट हुई कीर्ति को फिर से स्थापित करने के लिए दल-बल सहित उपस्थित हो गए। बड़ा भारी जमाव हुआ। भैरव घाट मनुष्यों से भर गया। कानपुर के ज्वाइंट मजिस्ट्रेट मि० डब्ल्यू० थैन सभापति के आसन पर बिठाए गए। लगभग 50 हजार की भीड़भाड़ में महर्षि जी और पं० हलधर में शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ।

शास्त्रार्थ का विषय मूर्ति पूजा था। पं० हलधर ने महाभारत से कुछ श्लोक पढ़कर कहा कि भील ने द्रोण की मूर्ति बनाई थी। इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि भील कोई वेदज्ञ ऋषि नहीं था, वह एक अनपढ़ आदमी था, उसका कार्य सबके लिए प्रामाणिक नहीं हो सकता। इसी प्रकार शास्त्रार्थ जारी रहा। अन्त में सभापति को निश्चय हो गया कि महर्षि जी का कथन ठीक है और पं० हलधर केवल समय बिता रहे हैं। वह महर्षि जी की विजय की घोषणा करके सभा से उठ गए। सभापति के उठ जाने पर लोगों में हल्ला मच गया, और पौराणिक धर्म तथा पराजय का सूचक एक ही शब्द आकाश में गूंजने लगा। थोड़े दिनों पीछे मि० थैन ने एक लिखित चिट्ठी कुछ सज्जनों को दी जिसमें लिखा था कि ''शास्त्रार्थ के समय मैंने महर्षि दयानन्द फकीर के पक्ष में व्यवस्था दी थी; मुझे विश्वास है कि उनकी युक्तियां वेदानुकूल थीं।''

- *क्रमशः*

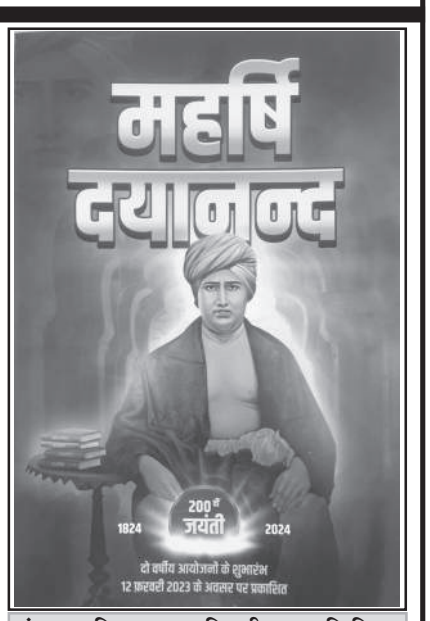

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Rishi Dayananda Saraswati's Influence Outside of India

- Ashwini K. Rajpal, Vancouver, Canada
Email : iffvs1@gmail.com

Rishi Dayananda lived between 4925 to 4985 of 28th *Kaliyuga Era*/1824 to 1883 C.E. Upon completion of his studies, he spent some time in Agra reviewing what he learnt. Whenever he had questions, he would walk to Mathura and back to obtain answers from his *Guru*, *Swami Virjananda*. He then started giving lectures on Vedic teachings in Northern India, Calcutta (now Kolkata), Gujarat and Bombay (now Mumbai) and Pune. His clarion call was to go 'Back to Vedas' as he argued it was divine revelation at the time of human creation/*vedotpatti.*

The *Rishi* started publishing books based on *Swami Virjananda's* teachings and his own research. His magnum opus was the *Satyaarth Prakash*. He soon realised that he needed an organization to propagate the Vedic knowledge. He was able to convince his devotees in Mumbai to establish the first *Arya Samaj* on *Chaitra Sukla Paksh 5* of 4976 year of 28th *Kaliyuga*/ 10th April 1875 C.E. Many *Arya Samaj* and educational institutions were started after this in India. *Arya Samaj* inspired many freedom fighters like *Swami Shraddhanand, Lala Lajpat Rai & Bhagat Singh*. This was in addition to spiritual and education-inclined persons like *Pandit Gurudatt Vidyarthi and Mahatma Hansraj.*

Four years after *Rishi Dayananda's* birth, the *Girmit*/ Indian Indenture System started when the first arrivals landed in Reunion Island (formerly Bourbon) on April 13, 1828. Approximately 1.5 million Indians were transported to different European colonies around the world to work as indentured labourers. It was a form of debt bondage. The slave trade was discontinued in 1807 and slavery was abolished in the British colonies on August 1, 1834. Indians were a reliable and cheap source of labour to replace the freed slaves who no longer wanted to work on the plantations. Experiment to take emigrants from other countries prior to India was an utter failure.

The *Girmitiyas*/Indian Indentured Workers were recruited to work for 5 years after they landed in the colonies. Their passages were paid to the colonies, and they were provided places to live. They were paid wages which was used to buy food, clothing and other necessities. Upon completion of their 5-year contract they could return to India at their own expense OR be reindentured for another 5 years and upon completion, return passages to India would be paid by the colonies OR remain in the colonies as non-indentured immigrants. At least 60% of *Girmitiyas* never returned to India. *Girmitiyas* were from Northern India, Calcutta area, Tamil Nadu & Andhra Pradesh with the majority from Western Bihar and Eastern Uttar Pradesh. A lot of them were tricked by recruiters to agree for *Girmit*. Once recruited they were not allowed to say goodbye to family members as they were taken to sub-depots and then to Calcutta or Madras ports.

To be Continue.....

पृष्ठ 5 का शेष

जरूरतमंद योग्य और मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा ....

हुए कहा कि यह सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है जिसे आर्य समाज निरन्तर आगे बढ़ा रहा है। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के तीसरे समुल्लास की भी प्रेरणा दी। श्री देव महाजन जी ह्यूस्टन अमेरिका ने अपने संदेश में बताया कि 64 वर्ष पूर्व वे किस तरह भारत से अमेरिका गये और उन्होंने कितना परिश्रम और पुरूषार्थ किया, किस-किस तरह की समस्याओं का सामना करके सफलता अर्जित की। आपने आर्य समाज ह्यूस्टन अमेरिका द्वारा चलायें जा रहे शिक्षा सहित सभी सेवा प्रकल्पों का वर्णन किया और सभी बच्चों को सफलता का आशीर्वाद दिया। अमेरकिा सभा के महामंत्री श्री विश्रुत आर्य जी ने विद्या के महत्व और छात्रवृति की उपयोगिता के लिए विद्यार्थियों को प्रेरणा दी। आपने अमेरिका में आयोजित होने वाले अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2024 के लिए सभी को आमन्त्रित किया।

सभा महामंत्री विनय आर्य जी ने सभी महानुभावों का अभार व्यक्त करते हुए बच्चों को संदेश दिया कि आज जिस तरह आप छात्रवृति लेकर उच्च शिक्षा के लिए आगे बढ़ रहे हैं वैसे ही भवष्यि में जब आप सफल हो जाओगे तो आप भी दूसरे साथियों की सहायता करना कभी मत भूलना। यह सेवा लगातार आगे बढ़ती जाये, ऐसी हमारी कामना है। इसके लिए सभी विद्यार्थियों ने हाथ उठाकर संकल्प लिया कि हम सब इस कार्य को आगे बढ़ायेंगे और जब हम सफल होगें तो जरूर दूसरों की शिक्षा में सहयोगी बनेंगे। केन्द्रीय सभा के कोषाध्यक्ष श्री मनीष भाटिया जी ने भी कार्यक्रम का संयोजन सामूहिक रूप से किया। उपस्थित सभी अधिकारियों ने बच्चों को छात्रवृति के चैक और पुस्तकें भेट की।

विशिष्ट प्रतिभावान विद्यार्थी शिवम और निष्ठा भी इस अवसर पर उपस्थित हुए। उन्होंने अपने अनुभव और आर्य समाज से प्राप्त सहयोग के विषय में विस्तार से बताते हुए कहा कि हम यूपीएससी की तैयारी के लिए पूरी तरह अपने मन को संकल्पित कर चुके हैं। आर्य समाज ने हमें न केवल वेचारिक रूप से सबल किया बल्कि आर्थिक रूप से सहयोग देकर हमें आगे बढ़ने में हमारी मद्द की है। इन दोनों शारीरिक रूप से अक्षम लेकिन मानसिक रूप से सक्षम प्रतिभावान छात्रों के आत्मविश्वास को देखकर सब भावविभोर हो गये। सभी बच्चों को पीतवस्त्र पहनाए गए और सबको छात्रवृत्ति का चैक एवं प्रमाणपत्र दिए गए। अन्त में सभी के लिए सुंदर भोजन की व्यवस्था की गई थी।

पृष्ठ 2 का शेष

डॉ. अम्बेडकर से किनारा....

जब ये हुआ तो एक चीज निकलकर सामने आई जिसे एक लेखक ली हैरिस ने समझा और दुनिया को बताया कि डेढ़ शताब्दी तक मार्क्सवादियों की पूंजीवाद में संकट की प्रतीक्षा बेकार गयी। पतन का कम्युनिस्ट आन्दोलन झुककर मौलवियों के खेमे में चला गया। क्योंकि यहाँ भी एक बड़ा वर्ग मौलिक सुविधाओं से दूर, गरीबी, भूख की जिन्दगी बसर कर रहा था। जिन लोगों को वामपंथी कभी समाजवाद के लिए एकत्र नहीं कर पाए, उन लोगों को मौलवी द्वारा इस्लामवाद के नाम पर खड़ा कर लिया गया। एक भीड़ जो समाजवाद से टूटकर इस्लामवाद की और मुड़ी उसकी कमान वामपंथ अपने हाथों में लेने को लालायित हो उठा। इसके बाद जिस क्रांति का आरम्भ होता है वह क्रांति हैं पश्चिम का विज्ञान, वामपंथ की संवेदना भरी कलम और तीसरा इस्लामवाद का जुनून।

यहाँ से एक नाटक शुरू होता है आप इसे कुछ उदहारण से समझ सकते है। साल 2015 में हिजबुल के आतंकी बुरहान वानी के बाद कश्मीर में बड़े स्तर पर उपजी हिंसा और मार्क्सवादियों का खुलकर सामने आना। प्रसिद्ध वामपंथी और सीपीआई नेता कविता कृष्णन ने कश्मीर में पत्थर फेंकने वालों को क्लीन चिट देते हुए कहा था कि कश्मीर में अलगाववादी और आतंकी पाकिस्तान पैदा नहीं करता बल्कि भारतीय सेना पैदा करती है। अरुंधती राय ने तो यहाँ तक कहा था कि 'कश्मीर में भारतीय आक्रमण शर्मनाक है। नई दिल्ली का दमन कश्मीरी संघर्ष को कमजोर नहीं कर सकता है, भारत अपने कब्जे वाली घाटी में अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकता, भले ही सेना की तैनाती 7 लाख से बढ़ाकर 70 लाख हो जाये।' एक वामपंथी पत्रकार बरखा दत्त जिसने मुस्लिम से शादी की और इस्लाम अपना लिया उसने तो बुरहान वानी को मासूम हेडमास्टर का बेटा बताया।

आज दिलीप मंडल ने जो कहा उसमें कोई दोराय नहीं है। ये सेकुलर पत्रकार नहीं है। इनके पीछे मजहबी ताकत है। आप देखना ये सेकुलर पत्रकार हमेशा मनुस्मृति से लेकर रामचरित्र मानस पर सवाल उठाते हैं। लेकिन कभी आपने इनको कुरान की व्याख्या करते देखा है? ये लोग उन मूवी का विरोध करेंगे जिसमें लव जिहाद या मुस्लिमों के अत्याचार दिखाए जाते हैं, ये हमेशा दूसरे धर्म मत को निशाना बनाते रहेंगे, ये कभी नहीं कहेंगे कि इस्लाम अपने आप में ही समस्या का कारण है। आंबेडकर जी के जन्मदिवस की बधाई या शुभकामनाएं ये लोग नहीं देंगे क्योंकि इनकी लड़ाई संविधान बचाना नहीं ये तो दूसरे मार्ग से शरियत लाना चाहते हैं। तभी ये कश्मीर फाइल्स और केरला स्टोरी का विरोध करते है। श्रद्धा हत्याकांड उसके हुए टुकडों को आम घटनाओं से जोड़ते हैं, बरेली में दो बच्चो की हत्या पर खामोश हो जाते हैं और कठुवा और मंदिर में मुस्लिम को पानी ना पीने देने की घटना को आसमान पर उठा लेते हैं। हो सकता है दिलीप मंडल जी ने जोगेंद्र मंडल से सबक लिया हो और आंबेडकर जी को पढ़ा हो तभी इनके खिलाफ मोर्चा खोला हो?

– ***सम्पादक***

पृष्ठ 3 का शेष

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी : संगीन की भांति सीना .....

ने ही आर्यसमाज का अनुयायी बनाया था। उन दिनों शिक्षा और प्रशासन भाषा क्या हो हिन्दी या उर्दू यह मुद्दा गूंज रहा था। गुरुदत्त और लाजपतराय ने हजारों विद्यार्थियों से हिन्दी के लिये हस्ताक्षर करवाये। सामाजिक कार्य, संस्कृत भाषा का अध्ययन आर्यसमाज में प्रवचन के साथ साथ गुरुदत्त विद्यार्थी ने एम०एस० सी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने वेदों के मन्त्रों की वैज्ञानिक व्याख्या की। उनके एक निबन्ध 'वैदिक संज्ञा विज्ञान तथा यूरोपीय विद्वान' को आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया।

पण्डित गुरुदत्त के हृदय में महर्षि दयानन्द द्वारा जलाई ज्योति निरन्तर प्रदीप्त होती जा रही थी। वे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की धुन में इतने दीवाने हो गये थे कि आर्यसमाज के पाँच नियम अपने चोले के आगे और पाँच पीछे लिखवा लिये। जो व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता उसे ही आर्य बनाने के लिये जुट जाते। उनके सत् प्रयास से चार नवीन वेदान्ती साधु आर्यसमाज में दीक्षित होकर वैदिक धर्म के प्रचार में आजीवन जुटे रहे स्वामी अच्युतानन्द इन सब में प्रसिद्ध थे।

अचानक महर्षि दयानन्द के रुग्ण होने का समाचार सुनकर आर्यसमाज लाहौर ने लाला जीवनदास और गुरुदत्त विद्यार्थी को उनकी सेवा करने के लिये अजमेर भेजा। 29 अक्टूबर को स्वामी दयानन्द जी की अवस्था बिगड़ गई। इतना दारुण कष्ट होने पर भी ऋषिवर के मुखमण्डल पर तेजो शशि को देख उसने कहा कि ऐसा भयंकर हलाहल विष दिया है कि यदि कोई दूसरा होता तो एक घड़ी भी जीवित नहीं रह पाता। परन्तु आदित्य ब्रह्मचारी एक मास तक मृत्यु को परे धकेलते रहे। इस नश्वर शरीर को एक दिन तो जाना ही था। 30 अक्टूबर का दिन उनके प्रयाण करने का बुलावा लेकर मृत्यु आ ही गयी।

ऋषिवर ने बाहर से आये सभी सज्जनों के बुलाया और उनकी ओर ऐसे निहारा मानो मूक भाषा में उपदेश दे रहे हों। इसके पश्चात् उन्होंने सभी को अपने पीछे खड़े होने के लिये कहा तथा खिड़की, दरवाजे खुलवा दिये गये। केवल अपने कमरे में गुरुदत्त को ही ठहराये रखा। हीरे की पहचान जौहरी ही कर सकता है। स्वामी जी की तीक्ष्ण दृष्टि ने उस रत्न को पहचान लिया। अपने समीप बुलाकर बहुत स्नेहपूर्वक दो-चार शब्द कहे। फिर छत और दीवारों को देखा। गायत्री मन्त्र और विश्वानि देव का जाप किया। थोड़ी देर ध्यान समाधि लगाई और नेत्र खोले तथा सीधे लेट गये। 'हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो, अहा! तूने अच्छी लीला की', करवट बदली और श्वास को रोक कर एकदम बाहर फेंक दिया। पंछी काया पिंजरे से निकल अनन्त में समा गया।

स्वामी जी के जाने के बाद आर्य समाज का कार्य आगे बढ़ाने का दायित्व ऐसा समझा कि यदि पढ़ने की धुन लगी तो लगातार तीन-चार दिन पढ़ते ही रहते थे। दिन-रात आर्य समाज वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में ज्येष्ठ मास की दोपहर में भी मीलों चलते जाते। इस सबका दुष्परिणाम होना ही था। शरीर प्रतिदिन दुर्बल होता चला गया। फिर भी प्रचार कार्य में जुटे रहे। लोग उनका भाषण सुनने के दीवाने थे। उनका विचार महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र लिखने का बना, परन्तु कार्य अधिक होने से यह सम्भव न हो सका। यद्यपि उन्हें कार्य करने का अवसर बहुत ही कम मिला, परन्तु जितना मिला उसमें आर्यसमाज की जड़े पाताल तक पहुंचा दी, जिसे उखाडने का साहस बड़े से बड़े तूफानों का भी नहीं हो सका।

अंतत: 26 वर्ष की अल्प आयु में वो समय निकट आ गया दिनभर भूमि को अपने आलोक से आलोकित कर सायंकाल जब सूर्यदेव अस्ताचल को जाने लगे तो उन्होंने आशा दृष्टि से चारों ओर देखा। है कोई ऐसा शूरवीर जो रात्रि के गहन अन्धकार में पथ भूले किसी पथिक को मार्ग दिखला सके। सभी ओर नीरवता छा गई। भला इतनी विशाल तमस से कौन संघर्ष करने का साहस जुटा पायेगा? बेचारे तारे टिमटिमाकर रह गये। अमावस्या का दिन होने से चन्द्रमा भी क्षीणकाय हो पृथिवी की आड़ में शर्मिन्दा होकर छिपा बैठा था। इतने में एक दीपक आगे आया और विनम्र होकर कहने लगा। देव मैं अपनी पूरी शक्ति से इस अज्ञानता के अन्धकार को दूर करने का आपको आश्वासन देता हूँ। देव! वत्स तेरा यश और कीर्ति अक्षुण्ण बनी रहेगी यद्यपि तुम्हारी जीवन ज्योति अल्पावधि वाली है, परन्तु फिर भी तुम्हारी ज्योति धधकती ज्वाला बन सर्वत्र फैलती चली जाएगी एक दिवस फिर यह वैदिक संस्कृति सर्वत्र संसार में फैलेगी इसी स्वप्न के साथ 26 वर्ष के इस सिपाही पंडित गुरुदत्त विधार्थी की आँखें सूर्य की किरणों के आगमन के साथ अस्त होती चली आर्य समाज का एक और सिपाही वैदिक धर्म के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर गया।

– ***राजीव चौधरी***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

शोक समाचार

आचार्य डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री को पत्नी शोक

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती प्रतिभा शास्त्री जी का दिनांक 2 अप्रैल, 2024 को लगभग 56 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ती एवं श्रद्धांजलि सभा 7 अप्रैल, 2024 को गुरुकुल गौतम नगर में सम्पन्न हुई।

आचार्या सुमेधा जी को भ्रातृ शोक

आर्य कन्या गुरुकुल चोटीपुरा के सह संस्थापक एवं आचार्या सुमेधा जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री चेतन स्वरूप जी का दिनांक 9 अप्रैल, 2024 को लगभग 79 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 अप्रैल, 2024 को कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, पो. रजबपुर, अमरोहा (उ.प्र.) में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 अप्रैल, 2024 से रविवार 28 अप्रैल, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 25-26-27/04/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 अप्रैल, 2024

चलो अमेरिका! ।।ओ३म्।। अमेरिका चलो!!

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर
दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में
आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका
के तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

न्यूयार्क (अमेरिका): 18 से 21 जुलाई, 2024

सम्माननीय भाईयो-बहिनो! जैसा कि आप जानते ही हैं कि सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए वर्तमान समय अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से भरा हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में देश विदेश में भव्य और विराट आयोजन सफलतापूर्वक निरन्तर हो रहे हैं। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन न्यूयॉर्क में किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त आर्यजनों से हमारा अनुरोध है कि -

1 विदेशों में रहने वाले महानुभाव

भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में रहने वाले समस्त आर्य महानुभाव अमेरिका सम्मेलन में भाग लेने हेतु सपरिवार पधारें।

2 अमेरिका में रहने वालों को दें निमन्त्रण

आर्यजन स्वयं सपरिवार पहुँचे तथा अमेरिका में रहने वाले पारिवारिक जनों और मित्रों को निमंत्रण देकर आने का अनुरोध अवश्य करें

3 सभा की ओर से आमन्त्रण भेजें

सभा की ओर से आमन्त्रण भिजवाने के लिए विदेश प्रवासी आर्यजनों के नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र 9650183339 पर व्हाट्सएप करें

ऐतिहासिकता के बनें साक्षी

न्यूयार्क में आर्यों का मेला लगेगा, महर्षि दयानन्द का गुणगान किया जाएगा, यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरक और ऐतिहासिक होगा, जिसके हम सब साक्षी बनेंगे। भारत से महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले समस्त महानुभावों के लिए पंजीकरण कराना अनिवार्य है। आप भी अपना पंजीकरण शीघ्र कराएं।

अमेरिका महासम्मेलन, पंजीकरण, टूर पैकेजे/कार्यक्रम और वीजा आदि की जानकारी/सहयोग प्राप्त करने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी 91-9650183339 को व्हाट्सएप्प करें। विदेश में रहने वाले अपने परिजनों का नाम, पता और सम्पर्क सूत्र भी इसी मोबाईल नं. पर नोट कराएं/व्हाट्एप्प करें।

अमेरिका यात्रा एवं टूर पैकेज की जानकारी के लिए दिया गया कोड स्कैन करें।

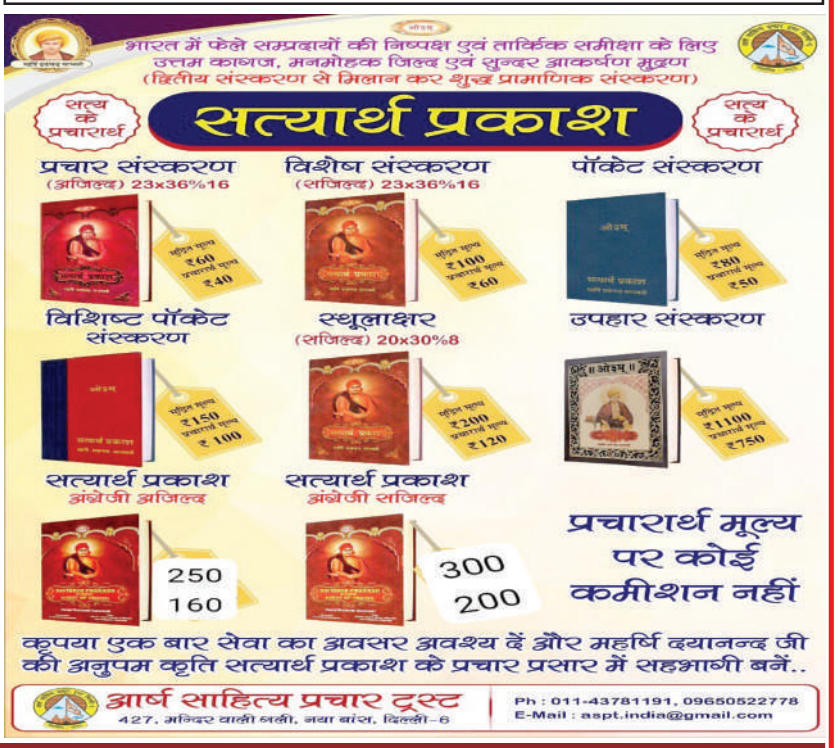

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह